आकाशवाणी
देहरादून (उत्तराखण्ड)

मंगलवार 03.02.2026 समय 1305

मुख्य समाचार :–

- देहरादून जिले के कालसी क्षेत्र में हिमाचल परिवहन निगम की बस खाई में गिरी। तीन लोगों की मृत्यु।
- उत्तराखंड में पर्वतारोहण को मिलेगी नई उड़ान, 83 प्रमुख हिमालयी चोटियों को पर्वतारोहण अभियानों के लिए खोला गया।
- मुख्य सचिव आनन्द बर्द्धन ने लम्बित राजस्व मामलों के शीघ्र निस्तारण के निर्देश दिए।
- रुद्रप्रयाग ज़िले के मक्कूमठ गांव में संचालित ग्रोथ सेंटर के माध्यम से महिलाओं की आजीविका सशक्त हुई।

बस दुर्घटनाग्रस्त

देहरादून जिले के कालसी क्षेत्र में क्वानू–मीनस मोटर मार्ग पर आज हिमाचल परिवहन निगम की बस के खाई में गिर जाने से उसमें सवार तीन लोगों की मृत्यु हो गई। जबकि करीब 10 लोग घायल बताए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने हादसे पर दुःख व्यक्त किया है। उनके निर्देश पर जिला प्रशासन और पुलिस द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए राहत व बचाव कार्य किया गया। साथ ही नजदीकी सभी चिकित्सा केंद्रों को हाई अलर्ट मोड पर रखा गया है।

चोटियां/पर्वतारोहण

उत्तराखंड पर्यटन विकास परिषद ने वन विभाग के समन्वय से गढ़वाल और कुमाऊं हिमालय क्षेत्र की 83 प्रमुख पर्वत चोटियों को पर्वतारोहण अभियानों के लिए पूरी तरह खोल दिया है। इनमें कामेट, नंदा देवी ईस्ट, चौखंबा समूह, त्रिशूल समूह, शिवलिंग, सतोपंथ, चंगाबांग, पंचचूली और नीलकंठ जैसी विश्व प्रसिद्ध और चुनौतीपूर्ण चोटियां शामिल हैं। इन चोटियों की ऊंचाई 5 हजार 700 मीटर से 7 हजार 756 मीटर तक है। ये शिखर न केवल तकनीकी कठिनाई और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध हैं, बल्कि हिमालय की भव्यता के जीवंत प्रतीक भी माने जाते हैं।

अधिसूचित 83 चोटियों पर अब भारतीय पर्वतारोहियों को कोई अभियान शुल्क नहीं देना होगा। पहले यह शुल्क भारतीय पर्वतारोहण संस्था और वन विभाग द्वारा लिया जाता था, लेकिन अब राज्य सरकार स्वयं इसका वहन करेगी। इससे आर्थिक बाधाओं के कारण पीछे रह जाने वाले युवाओं को बड़ा अवसर मिलेगा। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा है कि इन प्रमुख पर्वत चोटियों को पर्वतारोहण के लिए खोलना, राज्य के साहसिक पर्यटन को वैश्विक पहचान दिलाने की दिशा में ऐतिहासिक कदम है। उन्होंने कह कि सरकार का उद्देश्य है कि देश के युवा पर्वतारोहण जैसे साहसिक क्षेत्रों में आगे आएं, स्थानीय लोगों को रोजगार मिले और पर्यावरण संरक्षण के साथ संतुलित विकास सुनिश्चित हो। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार सुरक्षित, जिम्मेदार और सतत पर्वतारोहण के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। इस पहल का मुख्य उद्देश्य भारतीय युवाओं को पर्वतारोहण के लिए प्रोत्साहित करना, साहसिक पर्यटन को बढ़ावा देना और सीमावर्ती व दूर–दराज क्षेत्रों की स्थानीय अर्थव्यवस्था को सशक्त करना है। यह कदम भारत को विश्व स्तरीय ट्रेकिंग और हाइकिंग गंतव्य बनाने की दिशा में बड़ा प्रयास है, जो साहसिक पर्यटन को बढ़ावा देगा और स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन करेगा।

साइबर सुरक्षा

पौड़ी गढ़वाल में नकोट, श्रीनगर के एक स्कूल में बाल संरक्षण और साइबर सुरक्षा पर जन–जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को बाल अधिकारों, पॉक्सो अधिनियम, किशोर न्याय अधिनियम, साइबर अपराधों से बचाव और बाल संरक्षण से जुड़े विभिन्न कानूनों के प्रति जागरूक किया गया। विद्यार्थियों को किसी भी प्रकार की असहज स्थिति में निडर होकर शिकायत दर्ज कराने के लिए प्रेरित किया गया। बाल कल्याण समिति की सदस्य सुनीता भट्ट ने समिति की कार्यप्रणाली, उसके अधिकारों और दायित्वों के साथ ही संकटग्रस्त बच्चों के संरक्षण व पुनर्वास में समिति की भूमिका पर अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम में चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 के माध्यम से बच्चों को मिलने वाली सहायता, इसकी कार्यप्रणाली और आपात परिस्थितियों में त्वरित सहायता प्राप्त करने की प्रक्रिया को उदाहरणों के माध्यम से समझाया गया।

मुख्य सचिव

मुख्य सचिव आनन्द बर्द्धन ने राजस्व मामलों के त्वरित निस्तारण पर विशेष जोर देते हुए लम्बित मामलों को शीघ्र निस्तारण करने के अधिकारियों को निर्देश दिए हैं। सचिवालय में राजस्व विभाग की समीक्षा के दौरान उन्होंने सभी ज़िलाधिकारियों को धारा 34 व 143 के वादों के निस्तारण के लिए अभियान चलाए जाने पर जोर दिया। उन्होंने नैनीताल जिला प्रशासन की तर्ज पर निर्विवाद मामलों के निस्तारण के लिए प्रत्येक जिले में शिविर लगाने के निर्देश दिए। मुख्य सचिव ने धारा 143 के मामलों को भी छह माह या इससे अधिक समय तक लंबित रखे जाने पर चिंता व्यक्त की। करते हुए कहा कि ऐसे वादों को निस्तारण के लिए 45 दिन का समय निर्धारित किया जाए। मुख्य सचिव ने मंडल स्तर पर मंडलायुक्त और जिला स्तर पर जिलाधिकारियों द्वारा अपने न्यायालय व सत्र न्यायालय में सबसे पुराने पांच मामलों को चिन्हित कर उनके निस्तारण पर कार्य किए जाने पर भी जोर दिया। मुख्य सचिव ने प्रदेशभर के पांच वर्षों से अधिक समय से लंबित कुल एक हजार 760 मामलों का 10 प्रतिशत आगामी मार्च तक निस्तारण किए जाने का लक्ष्य निर्धारित किया। उन्होंने कहा कि अच्छा कार्य किए जाने पर प्रशस्ति पत्र के साथ ही वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट में भी प्रतिबिंबित होना सुनिश्चित किया जाएगा।

आत्मनिर्भरता

रुद्रप्रयाग ज़िले में ऊखीमठ ब्लॉक के मक्कूमठ गांव में महिलाएं आत्मनिर्भरता की नई कहानी लिख रही हैं। गांव में संचालित ग्रोथ सेंटर ने महिला सशक्तिकरण की दिशा में अहम भूमिका निभाई है और महिलाओं की आजीविका की तस्वीर बदल दी है। राष्ट्रीय आजीविका मिशन के तहत आस्था ग्राम संगठन से जुड़ी महिलाओं के सहयोग से यह ग्रोथ सेंटर संचालित किया जा रहा है। यहां महिलाओं को स्वरोजगार का अवसर मिला है और वे अपने पारंपरिक ज्ञान व स्थानीय संसाधनों के माध्यम से आय अर्जित कर रही हैं। महिलाओं का कहना है कि पहले वे घरेलू कामों तक सीमित थीं, लेकिन अब आत्मनिर्भर बनकर परिवार की आर्थिक जिम्मेदारी में भी सहयोग कर रही हैं। ग्रोथ सेंटर में महिलाएं माल्टा, संतरा और बुरांश से जूस तैयार कर रही हैं, जबकि आम, मिर्च, लिंगुड़ा और आंवले के अचार भी बनाए जा रहे हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में उगने वाले इन उत्पादों को बाजार से जोड़ने का काम भी महिलाएं स्वयं कर रही हैं, जिससे उनकी आमदनी बढ़ रही है। महिलाओं के कार्य को और मजबूत बनाने के लिए राष्ट्रीय आजीविका मिशन के तहत लगभग 15 लाख रुपये की लागत से यहां एक प्रोसेसिंग यूनिट स्थापित की गई है। इससे उत्पादों की गुणवत्ता और उत्पादन क्षमता में सुधार हुआ है। वर्तमान में इस ग्रोथ सेंटर में 10 महिलाएं नियमित रूप से काम कर रही हैं। जिला प्रशासन के अनुसार ग्रोथ सेंटर से जुड़ी महिलाएं अब तक करीब पांच लाख रुपये की आय अर्जित कर चुकी हैं। ब्लॉक स्तर पर महिलाओं की आजीविका बढ़ाने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं और आने वाले समय में अन्य क्षेत्रों में भी ऐसे ग्रोथ सेंटर शुरू करने की योजना है।

वनाग्नि बैठक

नैनीताल जिल के हल्द्वानी वन प्रभाग में वन विभाग के कर्मचारियों और अग्निशमन विभाग के बीच संयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान वन कर्मचारियों को जंगलों में आग बुझाने के दौरान अपनाई जाने वाली कार्यप्रणाली, आदेश प्रणाली, फर्स्ट एड और मेडिकल सामग्री के उपयोग के बारे में भी विस्तार से समझाया गया। वन विभाग के एसडीओ ने बताया कि जंगलों में आग की घटनाओं को रोकने के लिए ग्रामीणों और वन कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जंगलों की आग को रोकने में ग्रामीणों की सहभागिता बेहद जरूरी है। इसी उद्देश्य से गांव–गांव जाकर चौपालों का आयोजन किया जा रहा है, ताकि लोगों में जंगलों में आग लगने को लेकर जागरूकता बढ़ाई जा सके।